"अल्लाह के निकट ईसा की मिसाल आदम जैसी है कि अल्लाह ने उसे मिट्टी से पैदा किया और आदेश दिया कि हो जा और वह हो गया।" (क़ुरआन ३:५९)

यदि बिना बाप के पैदा होने के आधार पर हज़रत ईसा पूजा के पात्र हैं तो हज़रत आदम (अलैहि०) इस पूजा के अधिक पात्र हैं कि वे बिना माँ-बाप के पैदा किये गए थे।

हज़रत ईसा के चमत्कार

हज़रत ईसा (अलैहि०) चमत्कारिक रूप से बिना बाप के पैदा हुए और उन्होंने ईश्वर की इच्छा और अनुमति से बहुत-से महान चमत्कार भी करके दिखाए। जब लोगों ने हज़रत ईसा की माँ पर कुमारीगमन (Fornication) का आरोप लगाया तो वे अपनी माँ के बचाव और प्रतिरक्षा में पालने ही में बोलने लगे जबकि अभी वे बच्चे ही थे। क़ुरआन भी यही कहता है कि हज़रत ईसा (अलैहि०) मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे, अन्धे और कोढ़ी को ठीक कर दिया करते थे- और ये सब वे ईश्वर की इच्छा से ही करते थे।

यह वास्तविकता है कि हज़रत ईसा (अलैहि०) जो भी चमत्कार दिखाते थे उसका अर्थ यह नहीं है कि वे ईश्वर के सच्चे सेवक के अतिरिक्त और भी कुछ थे। वास्तव में, हज़रत नूह, मूसा (अलैहि०) और मुहम्मद (सल्ल०) सहित बहुत-से पैग़म्बरों ने चमत्कार दिखाए और ये सब चमत्कार ईश्वर की अनुमति और इच्छा से ही दिखाए गए, ताकि वे अपने दूत होने का प्रमाण लोगों को दिखा सकें।

हज़रत ईसा का सन्देश

पुराने नियम में वर्णित पैग़म्बर, जैसे कि इबराहीम, नूह और यूनुस (अलैहि०) इत्यादि ने कभी नहीं बताया कि ईश्वर त्रित्व (Trinity) का अंश है और न वे यह विश्वास रखते थे कि हज़रत ईसा कोई उनके उद्धारक थे। उनका सन्देश तो बहुत साधारण था कि ख़ुदा केवल एक और अकेला है उसके अतिरिक्त कोई पूजा-उपासना का हक़ नहीं रखता। यह बात भी ईश्वर के लिए कोई तर्कसंगत नहीं है कि वह हज़ारों साल तक एक ही सन्देश लेकर पैग़म्बरों को भेजता रहे, लेकिन ईश्वर ने उसको अचानक बदल दिया कि अब वह त्रित्व (Trinity) का अंश है, और अब यह अनिवार्य कर दिया गया कि हज़रत ईसा के ईश्वर होने पर विश्वास रखा जाए।

सत्यता यह है कि हज़रत ईसा ने भी वही सन्देश लोगों तक पहुँचाया था जो नए नियम के अनुसार अन्य सभी पैग़म्बरों ने पहुँचाया था। बाइबिल में एक ही मार्ग है कि वास्तव में इसी मूल सन्देश पर ज़ोर दिया जाए। एक आदमी हज़रत ईसा के पास आया और पूछा कि ईश्वर की "सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है? यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।" (मरकुस १२:२८-२९) (मत्ती २२:३७) इस प्रकार हज़रत ईसा के अनुसार सबसे महान आदेश और सबसे महत्वपूर्ण विश्वास यही है कि ईश्वर एक है। यदि हज़रत ईसा ख़ुदा होते तो कहा गया होता कि "मैं ख़ुदा हूँ, मेरी पूजा-उपासना करो।"

इसके अतिरिक्त नए नियम में एक ही अनुवाक्य जो बार-बार दोहराया गया है वह यह है कि ईश्वर एक है। जैसा कि इस्लाम में बताया गया है कि ईसा-मसीह के मिशन के साथ यह श्रेणीबद्धता है कि उन्हें बनी-इसराईल के पास पिछले नबियों के सन्देशों की पुष्टि करने के लिए भेजा था कि एक ही सच्चे ख़ुदा पर ईमान लाएँ। एक सम्माननीय आज्ञाकारी पैग़म्बर की तरह हज़रत ईसा ने ईश्वर के आदेशों का स्वेच्छापूर्वक पालन किया —जिससे हरेक को पता चलता है कि उसे अपनी इच्छा को ईश्वर के आदेशों के समक्ष झुका देना चाहिए।

और जब ईसा स्पष्ट निशानियाँ लिए हुए आया था तो उसने कहा था.....सत्य यह है कि अल्लाह ही मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी. उसी की तुम बन्दगी करो, यही सीधा मार्ग है। (क़ुरआन ४३:६४)

हज़रत ईसा (अलैहि०) लोगों को एक अकेले ख़ुदा की बन्दगी की तरफ़ बुलाने के लिए ख़ुदा की तरफ़ से भेजे गए एक सम्माननीय पैग़म्बर थे। यह बाइबिल से स्पष्ट है और क़ुरआन में इसकी पुष्टि की गई है। हज़रत ईसा के बारे में इस्लामी धारणा से असल ईसा मसीह की व्याख्या होती है और ख़ुदा के बारे में शुद्ध धारणा और उसकी पूर्ण महानता, अद्वितीयता और पूर्णता पर विश्वास बढ़ता है।

हम आपको आमन्त्रित करते हैं कि आप आएँ और इस्लाम के बारे में जानकारी प्राप्त करें। यह कोई अलग धर्म नहीं है। यह वही सन्देश है जिसे हज़रत नूह, इबराहीम, मूसा और ईसा (अलैहि०) ने दिया था और उसी सन्देश को अन्त में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों तक पहुँचाया। इस्लाम का अर्थ होता है 'ईश्वर के समक्ष समर्पण' और यह स्वाभाविक तथा पूर्ण जीवन-व्यवस्था है जो ईश्वर की ओर उन्मुख होने और उससे तथा उसकी स्रष्टि के साथ अपने सम्बन्धों को मज़बूत बनाने की ओर व्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। इस्लाम की शिक्षा है कि ईश्वर न्यायशील और कृपाशील है उससे अपने पापों की क्षमा-याचना के लिए अपने-आपको क़ुर्बान करने की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही कोई 'जन्मजात पापी है'। ईश्वर कर्मों के आधार पर हरेक के साथ न्याय करता है और हरेक अपने कर्मों के लिए ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी है।

इस्लाम हमें हर नबी का सम्मान करने और उनसे प्रेम करने की शिक्षा देता है, परन्तु प्रेम करने और सम्मान करने का अर्थ पूजा करना नहीं है क्योंकि पूजा और उपासना का पात्र तो केवल एक और अकेला ईश्वर ही है। हज़रत ईसा को ख़ुदा का पैग़म्बर मानने और मुस्लिम होने का अर्थ है कि, हम हज़रत ईसा (अलैहि०) की मूल एवं शुद्ध शिक्षाओं की ओर पलट रहे हैं।

हमसे सम्पर्क करें

इस्लामिक इनफ़ॉरमेशन सेंटर

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

ईसा मसीह
ईशदूत

मुसलमान ईसा[अ] से प्रेम करते हैं

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

ईसा मसीह एक ऐसी अस्तित्व का नाम है जिनसे पूरी दुनिया में लाखों लोग प्रेम करते हैं और उनका सम्मान करते हैं, लेकिन उनके व्यक्तित्व के बारे में बड़ी भ्रान्तियाँ पाई जाती हैं। मुस्लिम और ईसाई दोनों ही ईसा मसीह को उच्च सम्मान देते हैं परन्तु दोनों के दृष्टिकोण में बड़ा अन्तर पाया जाता है।

इस पेम्फ़लेट का उद्देश्य यही है कि हमारे समाज में ईसा मसीह के सम्बन्ध में जो धारणा है उसको स्पष्ट किया जाए। क्या ईसा मसीह ख़ुदा थे, या उन्हें ईश्वर ने अपना दूत बनाकर भेजा था ? वास्तव में ऐतिहासिक ईसा मसीह कौन थे ?

" ईसा मसीह ईश्वर के रूप में "

कुछ ईसाई कहते हैं कि "ईसा मसीह ख़ुदा हैं" या वे त्रित्व (Trinity) का अंश हैं — कि ईसा मसीह धरती पर ईश्वर का अवतार हैं, और यह कि ईश्वर स्वयं मानव रूप में धरती पर उतर आया। हालाँकि बाइबल में है कि ईसा मसीह ने जन्म लिया, वे खाना खाते, सोते, प्रार्थना करते और सीमित ज्ञान रखते थे- और ये सारी विशेषताएँ ईश्वर के लिए यथोचित नहीं हैं। ईश्वर की विशेषताएँ पूर्ण हैं जबकि मनुष्य इसके विपरीत है। फिर एक ही समय में दो विरोधाभासी चीज़ें पूर्ण कैसे हो सकती हैं।

इस्लाम की शिक्षा है कि ईश्वर सर्वदा पूर्ण है। यह बात मान लेना कि ईश्वर मनुष्य बन गया इस बात का ऐलान है कि ईश्वर (किसी विशेष समय में) अपूर्ण था अथवा है। क्या वह ख़ुदा, जो कभी अत्यन्त दुर्बल असहाय बच्चा था, जो बिना खाए-पिए और सोए जीवित नहीं रह सकता था, उस ईश्वर के समान हो सकता है जो बाइबिल के पुराने नियम में वर्णित है ? निश्चित रूप से नहीं!

कोई पूछ सकता है, "यदि ईश्वर कुछ भी कर सकता है, तो वह इन्सान क्यों नहीं बन सकता ?" परिभाषा के अनुसार, ईश्वर कभी अनीश्वरीय काम नहीं करता। ईश्वर कभी वह काम नहीं करता जो उसे ईश्वर से भिन्न कर दे। यदि ईश्वर मनुष्य बन जाए और इन्सान के रूप में आजाए तथा मानवीय गुण धारण कर ले, तो निश्चित रूप से वह ईश्वर नहीं रहेगा। बाइबिल के बहुत-से बहुअर्थी अनुवाक्य (Verses) ऐसे हैं जिनको यह दिखाने के लिए ग़लत तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है कि ईसा मसीह ख़ुदा थे। लेकिन यदि बाइबिल के अनुवाक्यों का स्वयं अध्ययन करें तो हम देखेंगे कि उसमें बार-बार यह बात कही गई है कि ईसा मसीह एक असाधारण व्यक्ति थे इससे अधिक कुछ नहीं। बाइबिल में बहुत-सी वाक्य ऐसी हैं जिनमें ईसा मसीह इस तरह बातें और व्यवहार करते हैं कि जैसे ईश्वर उनसे हटकर कोई और अस्तित्व है। उदाहरण के लिए देखें-

ईसा मसीह "मुँह के बल गिरे और उन्होंने प्रार्थना की।" (मत्ती २६:३९) यदि हज़रत ईसा ईश्वर होते तो क्या ईश्वर मुँह के बल गिर सकता है और प्रार्थना कर सकता है ? यदि हाँ, तो फिर वह किससे प्रार्थना करेगा बाइबिल में हज़रत ईसा को पैग़म्बर कहा गया है। (मत्ती २१:१०-११) हज़रत ईसा ने कहा, "मैं पिता के पास जा रहा हूँ, क्योंकि पिता मुझसे महान है।" (यूहन्ना १४:२८)हज़रत ईसा ने कहा, "मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।"(यूहन्ना २०:१७) यदि ईसा ख़ुदा थे, तो उन्होंने "अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा" क्यों कहा और वह कौन था जिसकी ओर वे गए ?

यदि ईसा ख़ुदा थे, तो उन्होंने लोगों से स्पष्ट रूप से कहा होता कि वे उनकी पूजा करें, और बाइबिल में इस प्रकार के स्पष्ट अनुवाक्य होते; जबकि उन्होंने इसके विपरीत कहा और हरेक को अपनी पूजा करने से रोका :उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला .....तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ। (मत्ति ७:२२-२३)

ख़ुदा का बेटा

कुछ ईसाइयों का मानना है कि ईसा मसीह ख़ुदा के बेटे हैं। वास्तव में इसका क्या अर्थ है ? निश्चित रूप से ख़ुदा इससे बहुत पाक है कि शाब्दिक अर्थों या भौतिक रूप में उसका कोई बेटा हो। इन्सान का बच्चा इन्सान होता है। बिल्ली का बच्चा बिल्ली(Kittens) ही होता है। तो इसका क्या अर्थ है कि ख़ुदा का बेटा है ? शाब्दिक अर्थों में न लेते हुए हम देखते हैं बाइबिल में "ख़ुदा का बेटा" शब्द सांकेतिक रूप में "सात्विक तथा सदाचारी व्यक्ति" के लिए प्रयुक्त हुए हैं, और ये शब्द केवल हज़रत ईसा के लिए ही नहीं बल्कि हज़रत दाऊद, सुलैमान और इसराईल (अलैहि०) के लिए भी प्रयुक्त हुए हैं: "इसराईल मेरा पुत्र (पहला बेटा) है।" (निर्गमन ४:२२)। वास्तव में तो जो भी सदाचारी पुरुष है उसे ईश्वर का पुत्र या ख़ुदा का बेटा कहा गया है : "जो भी ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं वे सब ख़ुदा के बेटे और बेटियाँ हैं।" (रोमियों ८:१४)

अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए महान और उच्च है वह! जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है तो बस उसे कह देता है, "हो जा!" तो वह हो जाती है। (क़ुरआन 19:35)

पिता और स्वामी

बिलकुल इसी प्रकार, जब 'पिता' शब्द ईश्वर के लिए बोला जाता है तो इसको भी शाब्दिक अर्थों में नहीं लेना चाहिए। बल्कि इसके बजाए यह समझा जाना चाहिए कि ईश्वर सृष्टा है, पालनहार है, सर्वशक्तिमान और सबका स्वामी है। बाइबिल में इस प्रकार के बहुत-से अनुवाक्य हैं जिनमें 'पिता' शब्द सांकेतिक रूप में प्रयुक्त हुआ है: "सब का एक ही परमेश्वर और पिता है।" (इफ़िसियों ४:६) कभी-कभी शिष्यों ने भी हज़रत ईसा को 'स्वामी' कह कर पुकारा है। यह शब्द भी बाइबिल की शुद्ध भाषा में ईश्वर के साथ-साथ समाज के सम्मानित और बड़े लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है। उदाहरण के लिए उस स्वामी को भी कहा गया है जो अपने अवज्ञाकारी सेवक को पीटता है। ....प्रभु (परमेश्वर)ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा .... (लूका २०: ४२-४७)बाइबिल के ही दूसरे भागों में ईसा मसीह के शिष्यों ने उनको ईश्वर का 'सेवक' कहकर सम्बोधित किया है: ".... हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमा से मंडित किया" (प्रेरितों के काम ३:१३)

इससे स्पष्टतः पता चलता है कि जब 'स्वामी' शब्द हज़रत ईसा के लिए प्रयुक्त हुआ है तो यह सम्मान का प्रतीक है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे ईश्वर हैं। ईसा मसीह के स्वभाव और ईश्वर की प्रकृति के उपर्युक्त विषय पर उलझन को दूर करने का प्रयास किया गया है जिसने समाज में बहुत अधिक भ्रान्ति और असन्तुष्टि पैदा की है। जो बिन्दु विचार करने का है वह यह है कि : ईश्वर ने इस विषय को समझने के लिए इतना मुश्किल क्यों बना दिया है ? इन भ्रान्तिपूर्ण शिक्षाओं की तुलना इस्लाम में ख़ुदा से सम्बन्धित साधारण, स्पष्ट एवं शुद्ध धारणा से किस प्रकार की जा सकती है ?

ईसा मसीह - पैग़म्बर

यहूदियत में हज़रत ईसा (अलैहि०) को मसीह मानने से ही इनकार कर दिया है। ईसाइयत में यह अत्यन्त विरोधाभासी बात है कि वहाँ हज़रत ईसा को ख़ुदा के रूप में या ख़ुदा के बेटे के रूप में पूजा जाता है। इस्लाम इन दोनों के बीच का रास्ता अपनाता है और ईसा (अलैहि०) को एक सम्माननीय पैग़म्बर और ईश्वरीय दूत मानता है, साथ ही साथ उनको मसीह भी मानता है, लेकिन मुसलमान उनकी पूजा नहीं करते, जिस तरह उस एक और अकेले ख़ुदा की करते हैं, जिसने हज़रत ईसा को और दुनिया की हर चीज़ को पैदा किया है।

(ईसा ने) कहा, "वास्तव में मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे पैग़म्बर बनाया..." (क़ुरआन १९:३०)

चमत्कारपूर्ण जन्म

क़ुरआन के अनुसार जिब्रील फ़रिश्ते को कुँवारी पवित्र मरयम के पास मनुष्य के भेस में भेजा गया और उन्होंने कुँवारी मरयम को बिना बाप के चमत्कार के रूप में एक बच्चे को जन्म देने की सूचना दी।

"उसने (फ़रिश्ते ने) कहा, मैं तो तेरे रब का भेजा हुआ हूँ और इसलिए भेजा गया हूँ कि तुझे एक पवित्र लड़का दूँ।" मरयम ने कहा, "मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा जबकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं है और मैं कोई बदकार औरत नहीं हूँ।" फ़रिश्ते ने कहा, "ऐसा ही होगा, तेरा रब कहता है कि ऐसा करना मेरे लिए बहुत आसान है, और हम यह इसलिए करेंगे कि उस लड़के को लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से एक दयालुता। और यह काम होकर रहना है।" (क़ुरआन 19: 19-21)

कुछ लोग कहते हैं कि हज़रत ईसा का यह चमत्कारपूर्ण जन्म ही उनके ख़ुदा होने का प्रमाण है। जबकि बिना बाप के पैदा होनेवाले हज़रत ईसा पहले आदमी नहीं हैं, इनसे पहले पैग़म्बर हज़रत आदम (अलैहि०) बिना बाप और बिना माँ के पैदा हो चुके हैं।

ईश्वर कहता है .....